माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

वर्ष-2019 24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
हिन्दी (वि.)	0 0 1	हिन्दी

→ परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

अंकों में परीक्षार्थी का रोल नम्बर

2	9	6	5	2	9	3	7	0

शब्दों में

दो	नौ	छः	पाँच	दो	नौ	तीन	सात	शून्य

उदाहरणार्थ	1	1	2	4	3	9	5	6	8
	एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

→ केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

क :— पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंको में ✗ शब्दों में ✗

ख :— परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 17

ग :— परीक्षा का दिनांक 02 | 03 | 2019

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकेण्ड्री परीक्षा

केन्द्राध्यक्ष केन्द्र क्र. 651039

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर : K.B. Gautam

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

→ परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा : परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

Chhotelal Ahirwa... (...M.S.)
...vt. Ex. H.S.S. Chanderi (Ashoknagar)
V.No. 9180113
Mob.: 9425767533

रामबाबू कुशवाह (मा. शिक्षक)
शास. उत्कृष्ट उ. मा. वि.
अशोकनगर पंजी. न. 1318054
मोबा. 8893319741

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्त (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		

कुल प्राप्तांक शब्दों में

② [ ] + [ ] = [ ]

... पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 2 के अंक | कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 01 के उत्तर

i) ...ती

ii) ...कृष्ण शर्मा नवीन

iii) ...नपन

iv) ...तिवाद

v) ...ान न देना

प्रश्न क्र. 2 के उत्तर

i) जयकुमार जलज

ii) तेरह वर्ष में

iii) इलाहाबाद

iv) चरन

v) ...ऊँट के मुँह में जीरा

de/mal Laser/Inkjet/Copier Label A4ST-16 99.1x33.9mmx16

3

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 3 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 03 के उत्तर

i) सत्य

ii) सत्य

iii) असत्य

iv) सत्य

v) असत्य

प्रश्न क्र. 04 के उत्तर

i) मंगल वर्षा - भवानी प्रसाद मिश्र

ii) अध्यक्ष महोदय - व्यंग्य विधा

iii) मेरे जीवन के कुछ चित्र - डॉ. रामकुमार वर्मा

iv) लक्ष्यार्थ - भ्रांतिमान

v) रस के अंग - चार

4 [ ] + [ ] = [ ]

पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

SECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 05 के उत्तर

i) 1) बघेली , 2) मालवी ।

ii) मीराबाई ने देह पर गर्व न करने को इसलिए कहा है क्योंकि यह शरीर मिट्टी का बना है तथा मृत्यु के पश्चात् मिट्टी में ही मिल जाएगा ।

iii) जहाँ उपमेय को उपमान से श्रेष्ठ या न्यून बताया जाये वहाँ व्यतिरेक अलंकार होता है ।

iv) 'गीता और स्वधर्म' के लेखक 'आचार्य विनोबा भावे' हैं।

v) एक नैनोमीटर का साइज मानव बाल के पचास हजारवें हिस्से के बराबर होता है ।

प्रश्न क्र. 06 का उत्तर

पार्वती और सूखी डाल में अनेक समानताएँ हैं । पार्वती ने निराहार खड़ी अटल तपस्या की थी, सूखी डाल भी निराहार खड़ी अटल तपस्या कर रही है । पार्वती ने तपस्या के बल पर शिव का वरण किया था, उसी प्रकार सूखी डाल भी तपस्या करके 'पल्लव बासना' बनेगी । पार्वती संतान के द्वारा सफल हुई, सूखी डाल फल देकर सफल होगी ।

5 + =

पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 5 के अंक कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 07 का उत्तर

कबीरदास जी ने सज्जन (साधु) की संगति करने को कहा है। संगति का प्रभाव मनुष्य पर अवश्य पड़ता है जो उसे सुमार्ग से हटाकर कुमार्ग पर ले जाती है इसलिए हमेशा सज्जनों की ही संगति करनी चाहिए।

प्रश्न क्र. 08 का उत्तर

धरती मानव तो बसंत मानवता है। यही दोनों का नाता है। जब मनुष्य लोकहित की भावना अपने भीतर भर लेता है तो उसके अंदर बसंत खिल उठता है।

प्रश्न क्र. 09 का उत्तर

केवट की जीविका का एकमात्र आधार उसकी नाव थी, जिस पर वह सवारियों को बैठाकर गंगा पार कराता था।

6

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 6 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 10 का अथवा का उत्तर

चातक अपनी बोली से विरही के हृदय को चोट (दुःख) पहुँचा रहा है, इसी कारण चातक को घातक कहकर संबोधित किया गया है।

प्रश्न क्र. 11 का उत्तर

मानव के चिर सुख का अमृत खोजनी खोजने तथा संसार के दुःखों से छुटकारा पाने के लिए गौतम वन, पर्वत, जंगल तथा न जाने कहाँ-कहाँ चले गये थे।

प्रश्न क्र. 12 का अथवा का उत्तर

युद्धभूमि के मध्य में खड़े होकर अर्जुन ने देखा कि दादा, बाप, बेटे, पोते आप्त स्वजन सम्बंधियों की चार पीढ़ियाँ एकत्र हुई थीं।

B
S
E

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 13 का अथवा का उत्तर

गाँव की संध्या में पूजाभाव शंख,घड़ियालों की मिलीजुली ध्वनियों तथा घंटियों की टनटनाहट में प्रकट होता है।

प्रश्न क्र. 14 का अथवा का उत्तर

आयतित अंधकार :— कवि सोम ठाकुर ने 'आयतित अंधकार' पश्चिमी भोगवादी संस्कृति को कहा है। नयी पीढ़ी भारतीय संस्कृति के महत्त्व को भुलाकर पश्चिमी चकाचौंध के पीछे दौड़ रही है जिसके कारण युवकों का भविष्य अंधकारमय हो रहा है।

प्रश्न क्र. 15 का अथवा का उत्तर

i) कलेजा जलना - जलन होना या घृणा करना।

वाक्य में प्रयोग - राम की तरक्की देखकर श्याम का कलेजा जल उठा।

ii) अँगूठा दिखाना - साफ इंकार करदेना।

वाक्य में प्रयोग - घर के काम में हाथ बटाने के लिए जब राधा से कहा गया तो उसने सभी को अँगूठा दिखा दिया।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 16 का उत्तर

विभावना अलंकार – " काव्य में जहाँ कारण के न होते हुए भी कार्य सम्पन्न हो, वहाँ विभावना अलंकार पाया जाता है।"

उदाहरण– "नाचि अचानक ही उठे, बिनु पावस वन मोर।"

प्रश्न क्र. 17 का उत्तर

"मैं छोटा आदमी हूँ छोटा बना रहना चाहता हूँ" से रामदरश मिश्र का आशय यह है कि वे एक साधारण व छोटे व्यक्ति हैं तथा आजीवन छोटे व्यक्ति बनकर ही रहना चाहते हैं। उन्हें इस प्रकार के बड़प्पन से डर लगता है जब उनका समस्त उठना-बैठना, खाँसना-खँखारना आदि सभी मीडिया के माध्यम से लोगों में चर्चा का विषय बने। वे चाहते हैं कि वे अपने आत्मीय लोगों से निकट संबंध बनाए रहें, साथ ही उनके निजी सुख-दुःख उनके निजी ही रहें।

9

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 9 क अक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 18 का उत्तर (अथवा)

भाव-विस्तार – ईश्वर इस सृष्टि के कण-कण में निवास करता है। उसपर किसी एक जाति, धर्म या सम्प्रदाय का अधिकार नहीं होता। वह सभी का होता है और सब उसके होते हैं। परंतु वर्तमान समय में मानव ने अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति हेतु ईश्वर को जाति, धर्म व सम्प्रदाय के आधार पर बाँट दिया है, जो कि बिल्कुल ही अनुचित है। मनुष्य को यह समझना होगा कि ईश्वर सभी का होता है तथा सभी लोगों का उसपर समान अधिकार होता है।

प्रश्न क्र. 19 का उत्तर

दुर्मिल सवैया – यह एक वार्णिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 24 वर्ण होते हैं। इसे 'चंद्रकला' भी कहते हैं। इसमें चार चरण होते हैं।

उदाहरण – "पुर तें निकसी रघुबीर वधू धरि धीर दये मग में डग द्वै...।
झलकि भरी भाल कनि जल की, पुट सुखि गये मधुराधर वै।
फिर बुझति है, "चलनो अब केतिक, पर्णकुटि करिहौं कित है?"
तिय की लखि आतुरता पिय की, अँखियाँ अति चारु चली जल च्वै॥"

(10) [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 10 के अंक | कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र॰ २० का उत्तर (अथवा)

आत्मकथा की विशेषताएँ – आत्मकथा की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :–

1) आत्मकथा लेखक के द्वारा स्वयं लिखी जाती है तथा यह काल्पनिक भी हो सकती है।

2) आत्मकथा लिखकर लेखक आत्म-परीक्षण करना चाहता है। आत्मकथा में लेखक के स्वयं के व्यक्तिगत अनुभव समाहित होते हैं।

B S E

आत्मकथा के लेखक व उनकी रचना

आत्मकथा के लेखक		रचना
1) भारतेन्दु हरिश्चंद्र	–	कुछ आप बीती कुछ जग बीती।
2) महात्मा गाँधी	–	सत्य के प्रयोग।

(11) + =

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 11 के अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र. 21. का उत्तर

प्रगतिवादी काव्य की विशेषताएँ :- प्रगतिवादी काव्य की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :-

शोषकों के प्रति विद्रोह तथा शोषितों से सहानुभूति - प्रगतिवादी कवियों ने अपनी कविताओं में किसानों व मजदूरों आदि पर जमींदारों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों का विरोध किया है।

ईश्वर के प्रति अनास्था - प्रगतिवादी काव्य की एक प्रमुख विशेषता ईश्वर के प्रति अनास्था का भाव है। इस युग के कवियों ने ईश्वर के प्रति अनास्था रखते हुए ईश्वर-शक्ति की अपेक्षा मानव-शक्ति पर बल दिया है।

प्रगतिवादी कवि व उनकी रचनाएँ

प्रगतिवादी कवि		रचनाएँ
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	-	कुकुरमुत्ता
सुमित्रानंदन पंत	-	युगवाणी, ग्राम्या

(12) [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 12 के अंक | कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 22 का उत्तर

शरद जोशी (साहित्यिक-परिचय)

i) रचनाएँ – 1) जीप पर सवार इल्लियाँ।
2) परिक्रमा।

ii) भाषा – शरद जोशी जी की भाषा सरल, सुस्पष्ट तथा बोधगम्य है। आपने अपने काव्य में खड़ी बोली का प्रयोग किया है। देशज व विदेशी शब्दों के प्रयोग से आपकी भाषा बोधगम्य बन गई है। आपकी भाषा में प्रवाह तथा प्रभावशीलता के गुण दृष्टिगोचर होते हैं। आपने मुहावरों व लोकोक्तियों का सटीक प्रयोग किया है।

शैली – आपने शैली की दृष्टि से हास्य-व्यंग्यात्मक शैली को अपनाया है। आपने अपने काव्य में समाज में व्याप्त बुराइयों, कुरीतियों तथा अंधविश्वासों पर करारा प्रहार किया है। आपने व्यंग्यात्मक भाषा को अपने काव्य में स्थान प्रदान किया है।

iii) साहित्य में स्थान – हिन्दी साहित्य में व्यंग्य लेखकों में हरिशंकर परिसाई के पश्चात आपका महत्वपूर्ण स्थान है। आपने अपनी अनूठी कृतियों से साहित्य को सजाने-सँवारने का कार्य किया। हिन्दी-साहित्य के प्रमुख व्यंग्य लेखकों में शरद जोशीजी का नाम सदैव स्मरणीय है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 23 का उत्तर

'जयशंकर- प्रसाद' (साहित्यिक- परिचय)

i) रचनाएँ - 1) कामायनी (महाकाव्य)।
2) आँधी (कहानी)।

ii) भावपक्ष - जयशंकर प्रसाद जी की प्रतिभा बहुआयामी है। उन्होंने अपने काव्य में भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट आस्था रखी। वे मुख्यतः प्रेम व सौंदर्य के कवि हैं, प्रेम उनकी रचनाओं का मूल-तत्व है। साथ ही उन्होंने अपने काव्य में प्रकृति को विविध रूपों में चित्रित किया है। वे नारी का सम्मान करते हैं तथा पुरुषों की अपेक्षा नारी को अधिक महत्व देते हैं। उन्होंने अपने काव्य में नारी के विविध रूपों का वर्णन किया है। वे उसे दया, क्षमा, मधुरिमा जैसे गुणों से परिपूर्ण मानते हैं। उन्होंने अपने गीतों के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना को बल प्रदान किया है।

B
S
E

कलापक्ष - जयशंकर प्रसाद जी भाषा के धनी थे। उन्होंने प्रारंभ में ब्रजभाषा में काव्य का सृजन किया तत्पश्चात खड़ी बोली को अपनी रचनाओं में स्थान दिया। अलंकारों का उन्होंने ~~अपनी~~ बड़ी कुशलतापूर्वक प्रयोग किया है। जयशंकर प्रसाद जी की रचनाओं का एक-एक शब्द मोती की तरह पिरोया हुआ है।

iii) साहित्य में स्थान - जयशंकर प्रसाद जी एक ऐसे पारस थे, जिनके स्पर्श से हिन्दी की अनेक

(14) [ ] + [ ] = [ ]

योग पूव पृष्ठ | पृष्ठ 14 के अंक | कुल अंक

प्रश्न क्र.

विधाएँ कंचन हो गईं। जयशंकर प्रसाद जी हिन्दी साहित्य के प्रवर्तक व छायावादी काव्य के प्रमुख कवि हैं। हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवियों में आपका प्रमुख स्थान है।

"काशी के सुंघनी साहू परिवार में,
जन्मा एक रचनाकार।
छायावाद का स्तंभ बना वह,
प्रसाद ही वह रचनाकार॥"

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 25 का अथवा का उत्तर

"यह संसार - - - - - - - - - सार्थकता है।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश 'खेल' नामक कहानी से अवतरित किया गया है, इसके लेखक 'जैनेन्द्र कुमार' जी हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत गद्यांश में संसार की क्षणभंगुरता के विषय में बताया गया है।

व्याख्या- लेखक जैनेन्द्र कुमार बताते हैं कि यह संसार क्षणभंगुर अर्थात् पल-भर में नष्ट होने वाले पानी के किसी बुलबुले के समान है। जिस प्रकार पानी का बुलबुला फूटकर पुन: जल में ही विलीन हो जाता है उसी प्रकार मनुष्य की आत्मा भी अंत में परमात्मा में विलीन हो जाती है। यह सम्पूर्ण (ब्रह्माण्ड) ब्रह्म का है जो अंत में उसी में विलीन हो जाएगा। इसी कारण आत्मा को सदैव परमात्मा में विलीन होने के लिए प्रयत्नरत रहना चाहिए। मनोहर द्वारा जब सुरबाला का भाड़ लात मारकर तोड़ दिया गया था तब लेखक जैनेन्द्र कुमार कहते हैं कि लात मारकर भाड़ तोड़ना केवल परमात्मा का साधन मात्र है, जो जहाँ से आया है, अंत में उसी में विलीन हो जायेगा।

विशेष-
1) संसार की क्षणभंगुरता को बताया गया है।
2) आत्मा को सदैव परमात्मा में विलीन रहने के लिए प्रयत्नरत रहना चाहिए।
3) खड़ी बोली का प्रयोग।

16

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 16 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 25 का अथवा का उत्तर

मैया कबहि - - - - - - - - - - - भुई लोटी ||

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश 'स्नेह और वात्सल्य' के अंतर्गत 'सूर के बालकृष्ण' नामक शीर्षक से अवतरित किया गया है, जिसके कवि 'सूरदास' जी है।

प्रसंग:- इन पंक्तियों में कवि सूरदास जी ने कृष्ण की बाल-लीलाओं का वर्णन किया है।

व्याख्या- कवि सूरदास जी कहते हैं कि बालक कृष्ण अपनी माता से पूछ रहे हैं, कि मैया! मेरी चोटी कब बढ़ेगी? तूने कहा था कि रोज दूध पीने से चोटी बढ़ती है इसलिए मैं प्रतिदिन दूध पीता हूँ, परन्तु यह तो बढ़ती ही नहीं है। मैं कितने दिनों से दूध पी रहा हूँ परंतु यह तो अभी भी छोटी ही है। तूने तो कहा था कि मेरी चोटी बलदाऊ की चोटी की ही तरह लंबी और मोटी हो जाएगी। बाल सँवारते समय, गुहते समय, नहाते समय नागिन की भाँति लोटा करेगी, परंतु ऐसा तो कुछ भी नहीं हुआ।

विशेष:-
1) ब्रजभाषा का प्रयोग।
2) अनुप्रास अलंकार व वात्सल्य रस की प्रधानता।
3) कृष्ण की बाल-लीला का वर्णन।

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 17 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

न क्र.

प्रश्न क्र. 26 का उत्तर

i) गद्यांश का उचित शीर्षक 'हिमालय' है।

ii) वैदिक काल से हिमालय को पवित्र माना जाता है।

iii) हिमालय को देखकर मन आनंद और कृतज्ञ हो जाता है। ऐसा लगता है कि यह विशाल सृष्टि ईश्वर की ही देन है।

iv) यहाँ बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री जैसे पवित्र तीर्थ हैं।

v)

शब्द	मूल-शब्द	प्रत्यय
i) कृतज्ञता	कृतज्ञ	ता
ii) वैदिक	वेद	इक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 27 का उत्तर

बधाई - पत्र

वार्ड नं. - 05,
कानाखेड़ा पठार,
साँची ।
दिनांक - 02 मार्च 2019.

प्रिय मित्र शिवानी,
नमस्कार ।
मैं यहाँ कुशलतापूर्वक हूँ और आशा करती हूँ कि तुम भी सकुशल होगी । तुम्हारा 15 फरवरी का पत्र कल मिला । तुमने मुझे बताया कि तुमने वाद - विवाद प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान प्राप्त किया है मुझे यह जानकर बहुत हर्ष हुआ । सचमुच तुम्हारे लिए, पूज्य चाचा-चाची के लिए तथा हम सबके लिए बड़े हर्ष की बात है । ईश्वर से कामना है कि वह तुम्हें इसी प्रकार जीवन मे सफलता प्रदान करता रहे ।

पूज्य चाचा-चाची को मेरा प्रणाम । पत्र का उत्तर शीघ्र भेजना ।

तुम्हारी प्रिय सहेली
अ. ब. स.

B S E

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 23 का उत्तर (ब)

जल - संरक्षण

रूपरेखा - 1) प्रस्तावना ।
1) जल प्राप्ति के स्त्रोत ।
2) जल का महत्व ।
3) जल के विभिन्न उपयोग ।
4) वर्तमान समय में जलापूर्ति का अभाव ।
5) जल - जीवन का आधार ।
6) जल - संरक्षण की विधियाँ ।
7) जल की कमी के प्रमुख कारण ।
8) जल के अभाव में जीवन पर संकट ।
9) उपसंहार ।
10)

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 28 का उत्तर (अ)

" नारी है तो कल है "

रूपरेखा –
~~प्रस्तावना~~ •
1) प्रस्तावना ।
2) वैदिक काल में नारी ।
3) प्राचीनकाल में नारी ।
4) मध्यकाल में नारी ।
5) आधुनिक काल में नारी ।
6) नारी के विशेष गुण ।
7) उपसंहार ।

" पहले भारत में नारी को देवी-सा पूजा जाता था, फिर उसको पददलित मानकर पैरों से रौंदा जाता था। पुनः जागरण का युग आया नारी को सम्मा[…] अपने श्रम-पौरुष के बल पर फिर उसको ऊँ[…]ला।

1) प्रस्तावना :- नारी सृष्टि का आधार है। वह समाज को जीवनदान देती है। जिस प्रकार तार के बिना वीणा तथा धुरी के बिना रथ का पहिया बेकार है ठीक उसी प्रकार नारी के बिना मनुष्य का सामाजिक जीवन बेकार है। नारी, पुरुष की जीवनसंगिनी है। वह पुरुष की सहभागिनी है। नारी के बिना मनुष्य

प्रश्न क्र.

के सामाजिक जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। नारी बेटी है, पत्नी है, मित्र है तथा प्रेयसी है। नारी जननी है। इस प्रकार अनेकों गुणों से नारी को विभूषित व सुसज्जित बताया जाता है। वास्तव में नारी-पुरुष जीवन रथ के दो पहिये हैं।

2) वैदिक काल में नारी:- वैदिक काल में मनु ने यह कहकर कि जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं, नारियों के महत्व को और भी अधिक बढ़ा दिया है।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, तत्र देवता रमन्ते।
यत्र नार्यस्तु न पूज्यन्ते, तत्र देवता न रमन्ते।।"

अर्थात- जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं तथा जहाँ नारियों की पूजा नहीं होती है वहाँ देवता निवास नहीं करते हैं।

3) प्राचीनकाल में नारी:- प्राचीनकाल में नारियों को गौरवशाली स्थान प्राप्त था। सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक सभी क्षेत्रों में पुरुषों की तरह नारियों को भी अधिकार प्राप्त थे। उन्हें दया, क्षमा, ममता की प्रतिमूर्ति माना जाता है, साथ ही गृहलक्ष्मी, सरस्वती व देवी जैसे नामों से सम्बोधित किया जाता था।

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

नारी विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों का हाथ बँटाती थी। वह वेदों का उच्चारण करती थी और आवश्यकता पड़ने पर युद्ध में तलवार लेकर शत्रु का सामना भी करती थी।

4). मध्यकाल में नारी:- मध्यकाल में नारी की दशा सोचनीय हो गई। उसने घर की चार दीवारों में बंद कर दिया गया। वह चार दीवारों के बीच घुटने को विवश हो गई। बाल-विवाह, सती-प्रथा, पर्दा-प्रथा आदि अनेक कुरीतियों ने नारी की स्थिति सोचनीय बना दी।

B
S
E

"अबला जीवन हाय तेरी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में पानी॥"

[मैथिलीशरण गुप्त]

5] आधुनिक काल में नारी - आधुनिक काल में नारी की स्थिति में सुधार हुआ है। वह पुरुषों के समान विभिन्न क्षेत्रों में अपना प्रतिनिधित्व प्राप्त कर रही है। नारी की स्थिति में सुधार लाने हेतु राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानंद जैसे महापुरुषों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान समय में

प्रश्न क्र.

कोई भी क्षेत्र नारी के प्रतिनिधित्व से अछूता नहीं रहा है। महारानी लक्ष्मीबाई, दुर्गावती, कल्पना चावला, प्रतिभा पाटिल जैसी अनेकों स्त्रियों ने भारत देश की उन्नति व विकास में सहयोग प्रदान किया है। परंतु अभी भी इस दिशा में और अधिक प्रयास किए जाने की आवश्यकता है ताकि नारी-पुरुष का भेद समाज से पूर्णतः समाप्त हो जाए।

"मुक्त करो नारी को मानव, चिरबंदिनी नारी को।
युग-युग की निरमम कारा से, जननी सखी प्यारी को॥"

[कविवर पंत जी]

6| नारी के विशेष गुण :— यदि इतिहास की सारी उथल-पुथल की जाए तो ऐसे अनेकों गुण भारतीय नारियों में पाए जाते हैं जो उसे विश्व की नारियों से भिन्न ~~बनाती है~~ बनाते हैं। दया, ममता, क्षमा व मर्यादा आदि ऐसे अनेकों गुण भारतीय नारी में विद्यमान हैं जो उसे विश्व की नारियों से भिन्न बना देते हैं।

7| उपसंहार :— नारी जगत का आधार है। वर्तमान में अनेकों प्रयासों के फलस्वरूप नारी की स्थिति सुधरती जा रही है। अभी भी कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ नारी की उपेक्षा की जाती है परंतु वह दिन दूर नहीं है जब नारी-पुरुष भेद समाप्त हो जाएगा तथा वह अपने असली रूप को वरण कर लेगी।

+ =

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 24 के अंक | कुल अंक

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रश्न क्र.

"मानवता की मूर्तिवती, तू भव्य-भाव भूषण भण्डार।
दया-क्षमा-ममता की आकार, विश्व-प्रेम की है आधार॥"

BSE